www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

भगवान बुद्ध

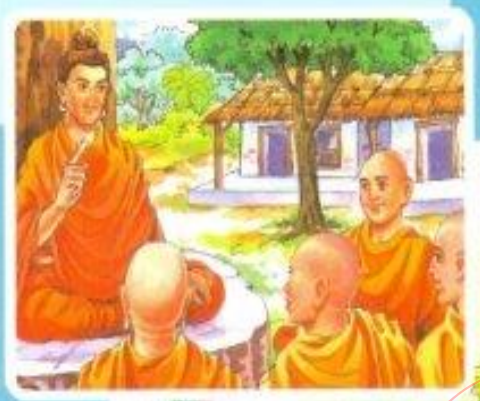

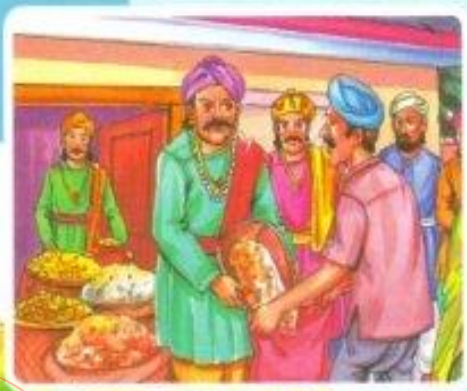

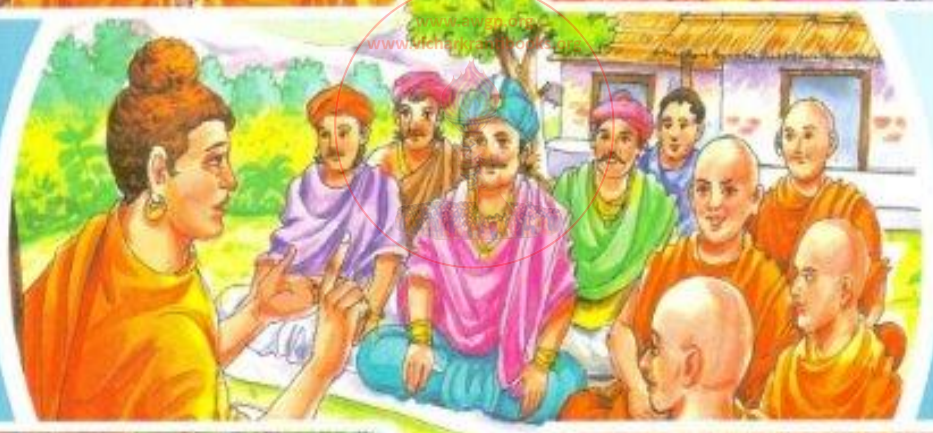

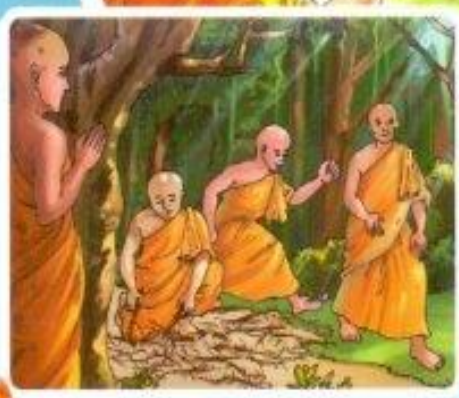

9

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अमरता की फसल

भगवान बुद्ध काशी के एक संपन्न किसान के पास गए। उससे भिक्षा माँगी। किसान ने व्यंग्य भाव से कहा—''मैं परिश्रम से खेत जोतता-बोता हूँ, तब जो फसल उपलब्ध होती है उसी से उदर-पूर्ति करता हूँ, किंतु आप बिना खेती किए भोजन पाना चाहते हैं।''

''मैं भी तो किसान हूँ, खेती करता हूँ''—बुद्ध ने प्रशांत स्वर में उत्तर दिया।

'खेती!' किसान ने गेरुए वस्त्र पहने भिक्षु की ओर अचरज से देखा। ''हाँ, वत्स!'' बुद्ध ने कहा—''मैं आत्मा की खेती करता हूँ। ज्ञान के हल से श्रद्धा के बीज बोता हूँ। तपस्या के जल से सींचता हूँ। विनय मेरे हल की हरिस, विचारशीलता फल और मन नरैली है। सतत प्रयास का यान मुझे उस गंतव्य की ओर ले जा रहा है जहाँ न दुःख है और न संताप। मेरी इस खेती से अमरता की फसल लहलहाती है, वत्स!''

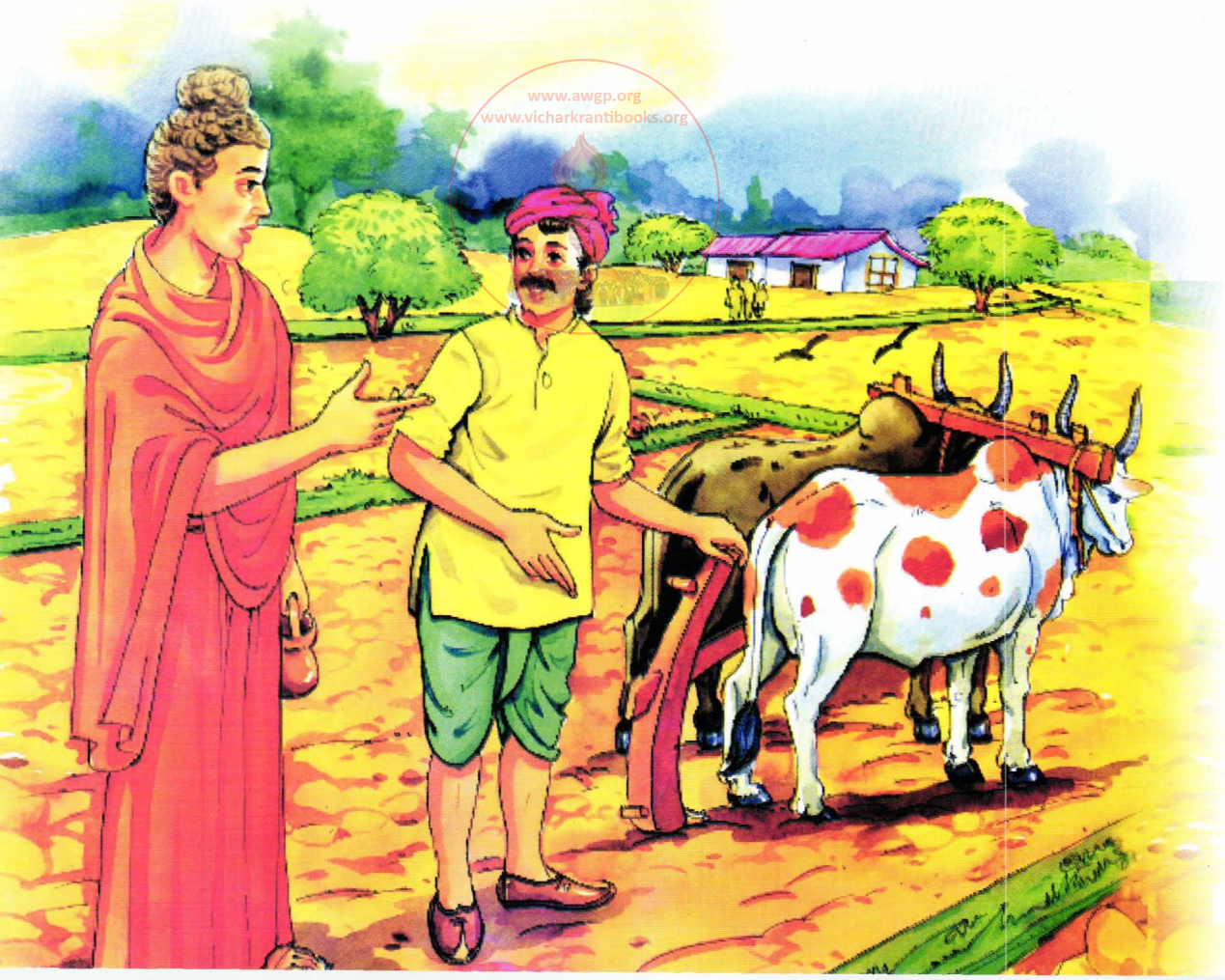

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गालियाँ वापस

भगवान बुद्ध घूमते-घूमते एक ब्राह्मण के घर पहुँच गए। ब्राह्मण बहुत दुष्ट था। वह बुद्ध को जी भर कर गालियाँ देने लगा और उन्हें चले जाने को कहा।

बुद्ध देर तक सुनते रहे। जब उन सज्जन ने बोलना बंद किया तो उन्होंने पूछा—"ब्राह्मण महाराज! आपके यहाँ कोई अतिथि आते होंगे तो आप उनका सुंदर भोजन और मिष्टान्न से स्वागत करते होंगे?" ब्राह्मण ने कहा—"और क्या।" बुद्ध ने फिर पूछा—"यदि वह अतिथि उस भोजन को स्वीकार न करे तो आप उस भोजन को फेंक देते होंगे।" "फेंक क्यों देते हैं, हम स्वयं ग्रहण कर लेते हैं"—ब्राह्मण ने विश्वासपूर्वक उत्तर दिया। "तो हम आपकी यह गालियों की भेंट स्वीकार नहीं करते, अपनी वस्तु आप ग्रहण करिए।"

यह कहकर बुद्ध मुस्कराते हुए वहाँ से चल पड़े। ब्राह्मण की गरदन शर्म से झुक गई।

हमें किसी की गंदी आदतों को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

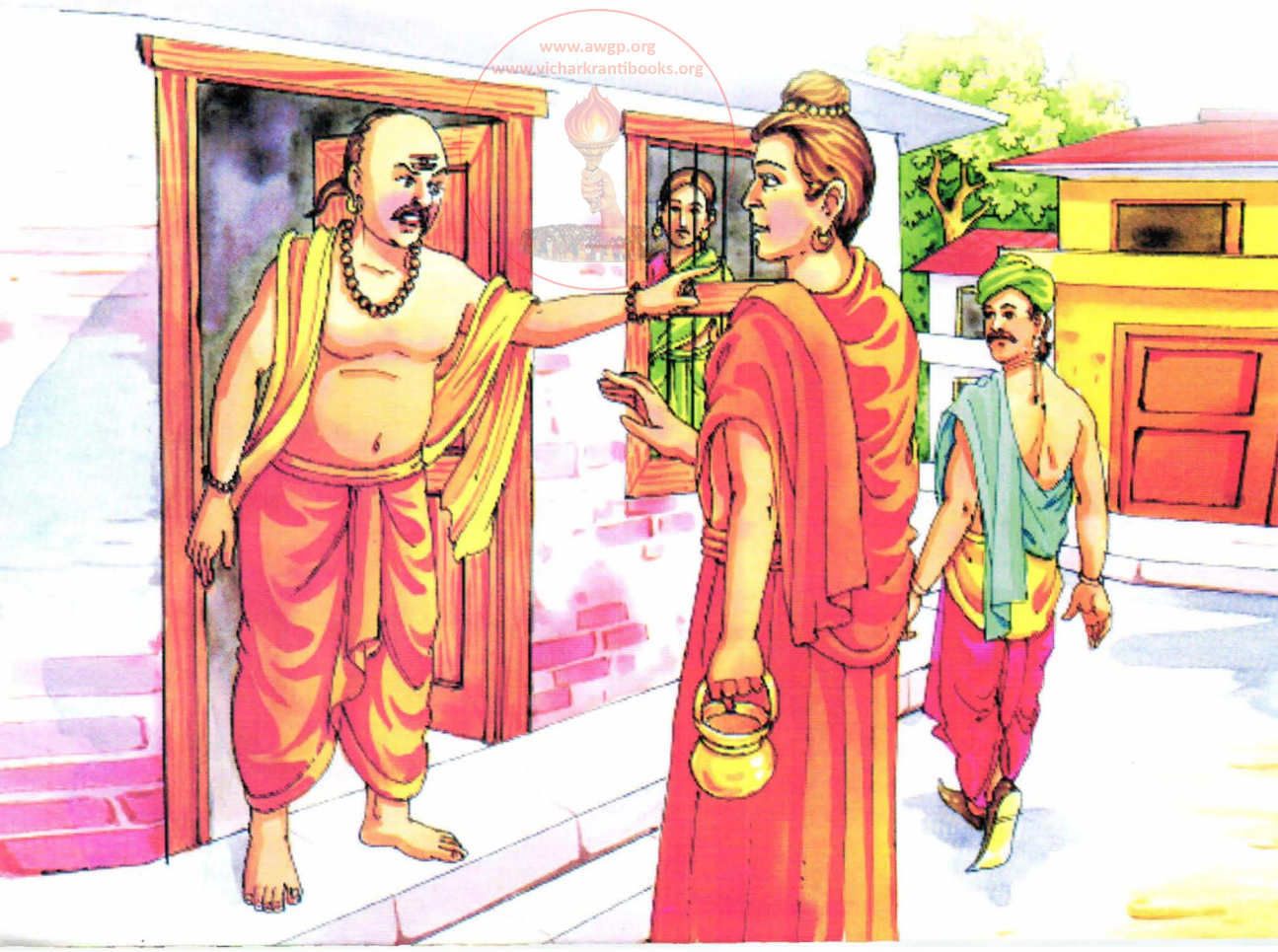

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुजाता की खीर

सुजाता ने खीर दी, बुद्ध ने उसे ग्रहण कर परम संतोष का अनुभव किया। उस दिन उनकी जो समाधि लगी तो फिर सातवें दिन जाकर टूटी। जब वे उठे, उन्हें आत्म साक्षात्कार अर्थात आत्मा-परमात्मा का ज्ञान हो चुका था। नेरंजरा नदी के तट पर प्रसन्नमुख आसीन भगवान बुद्ध को देखने गई सुजाता बड़ी विस्मित हो रही थी कि यह सात दिन तक एक ही आसन पर कैसे बैठे रहे ? तभी सामने से एक शव लिए जाते हुए कुछ व्यक्ति दिखाई दिए। उस शव को देखते ही भगवान बुद्ध हँसने लगे। सुजाता ने प्रश्न किया—"योगिराज ! कल तक तो आप शव देखकर दुखी हो जाते थे, आज वह दुःख कहाँ चला गया ?"

भगवान बुद्ध ने कहा—"बालिके ! सुख-दुःख मनुष्य की कल्पना मात्र है। कल तक जड़ वस्तुओं में आसक्ति होने के कारण यह भय था कि कहीं वह न छूट जाए, वह न बिछुड़ जाए। यह भय ही दुःख का कारण था, आज मैंने जान लिया कि जो जड़ है, उसका परिवर्तन तो होना निश्चित है। पर जिसके लिए दुःख करते हैं, वह तो न परिवर्तनशील है, और न नाशवान। अब तू ही बता जो कभी न नष्ट होने वाला ज्ञान प्राप्त कर ले, उसे नाशवान वस्तुओं का क्या दुःख ?"

सुजाता यह उत्तर सुनकर प्रसन्न हुई और स्वयं भी आत्म चिंतन में लग गई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देववर्द्धन की योग्यता

धर्मदीक्षा का शिविर समाप्त हुआ। सारे भिक्षु अपनी-अपनी रुचि की दिशा में परिव्रज्या के लिए निकल गए। देववर्द्धन नामक भिक्षु भी गौतम बुद्ध के सामने उपस्थित हुआ और प्रार्थना की—"भगवन्! मेरी इच्छा है कि मैं कलिंग जाकर संघ का प्रचार करूँ।" कलिंग का नाम सुनकर बुद्ध बोले—"वत्स! वहाँ के लोग बड़े अधर्मी और ईर्ष्यालु हैं, वे मिथ्या दोष लगाकर तुम्हें सताएँगे, गालियाँ देंगे इसलिए वहाँ जाने का इरादा बदल डालो।"

भिक्षु ने उसी विनय के साथ कहा—"भगवन्! गालियाँ देंगे तो क्या हुआ, मारेंगे तो नहीं।" तथागत कहने लगे—"तात्! इसमें भी संदेह नहीं वे आततायी भी हैं। तुम्हें मार भी सकते हैं।" देववर्द्धन फिर भी दृढ़ रहा। उसने कहा—"देव! थोड़े दंड से इस शरीर का बिगड़ता क्या है, मारेंगे तो भी बुरा नहीं, वे मेरे प्राण तो नहीं लेंगे?"

बुद्ध ने कहा—"पर वे तुम्हें जान से मार देंगे देववर्द्धन, मैंने उनकी निर्दयता देखी है।"

देववर्द्धन बोला—"तो क्या हुआ भगवन्! आपने ही तो कहा है कि यह शरीर धर्म-कार्य में लग जाए तो पुण्य ही होता है। इस तरह तो वे लोग मेरे साथ उपकार ही करेंगे।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मणत्व की पहचान

भगवान बुद्ध जैतवन में ग्रामवासियों को उपदेश कर रहे थे। शिष्य अनाथ पिंडक भी समीप ही बैठा धर्मचर्चा का लाभ ले रहा था।

तभी सामने से महाकाश्यप मौद्गल्यायन, सारिपुत्र, चुंद और देवदत्त आदि आते हुए दिखाई दिए। उन्हें देखते ही बुद्ध ने कहा—"वत्स! उठो, यह ब्राह्मण मंडली आ रही है, उसके लिए योग्य आसन का प्रबंध करो।"

अनाथ पिंडक ने कहा—"भगवन्! आप संभवतः इन्हें जानते नहीं। ब्राह्मण तो इनमें कोई एक ही है, शेष कोई क्षत्रिय, कोई वैश्य और कोई शूद्र भी है।"

गौतम बुद्ध अनाथ पिंडक के वचन सुनकर हँसे और बोले—"तात्! किसी की जाति, जन्म से नहीं गुण, कर्म और स्वभाव से पहचानी जाती है। श्रेष्ठ रागरहित, धर्मपरायण, संयमी और सेवाभावी होने के कारण ही इन्हें मैंने ब्राह्मण कहा है। ऐसे पुरुष को तू निश्चय ही ब्राह्मण मान, जन्म से तो सभी जीव शूद्र होते हैं।"

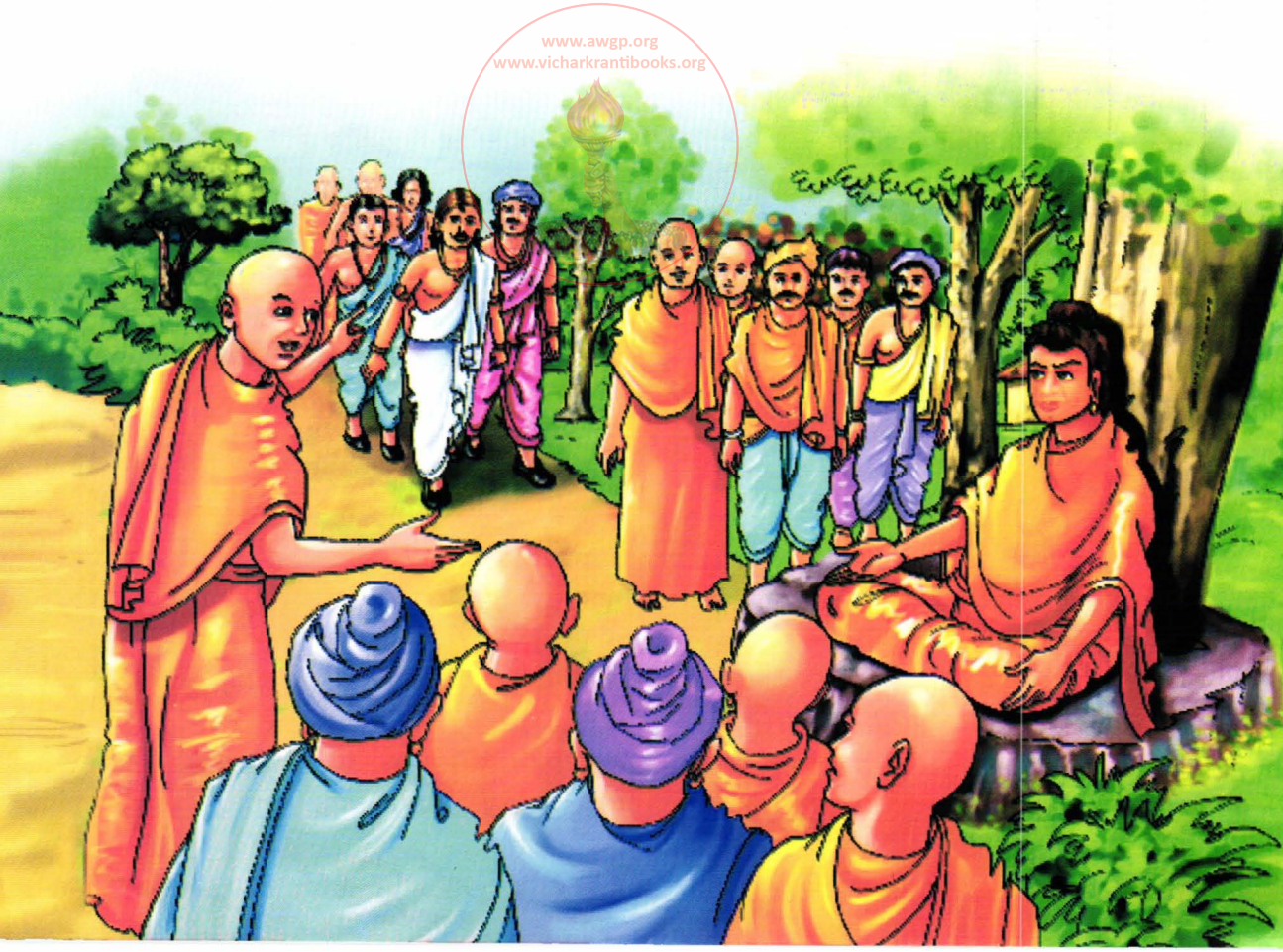

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तोड़ना आसान जोड़ना कठिन

एक बार गौतम बुद्ध निर्जन स्थान से जा रहे थे। रास्ते में भेड़ों के झुंड के साथ एक गड़रिया मिला। गड़रिये के कंधे पर एक भेड़ का बच्चा था जिसे वह उठाकर ले जा रहा था। यह सोचकर तथागत ने गड़रिये को रोका और पूछा—"तुम इस मेमने को कंधे पर क्यों उठाए हुए हो ?"

गड़रिये ने साधु वेश में एक तेजस्वी पुरुष को अपने सामने देखा तो वह अनायास ही श्रद्धा से नत-मस्तक हो उठा और बोला—"भगवन्! मेमने के पैर में चोट है इसलिए इसे कंधे पर रखना पड़ा है।" भगवान बुद्ध मेमने की यह स्थिति देखकर और भी दयार्द्र हो गए। तभी गड़रिये ने पूछा—"भन्ते! आपको इस अकेले मेमने के पैर की चोट से इतनी व्यथा है तो फिर थोड़ी देर बाद जब इन भेड़ों को एक साथ अग्नि में समर्पित किया जाएगा तो कितनी व्यथा होगी ?"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''क्या कहा—क्या ये सब भेड़ें बलि चढ़ाने के लिए ही ले जाई जा रही हैं ? कौन है वह अभागा जो इन निरीह निरपराध भेड़ों को बलि चढ़ाकर स्वर्गप्राप्ति का सौभाग्य लूटना चाहता है ?''

गड़रिये ने कहा—''राजगृह का अधिपति अजातशत्रु। कहते हैं कि उसने अपने पिता का वध किया था। उसी पाप के प्रायश्चितस्वरूप वह यज्ञ रचकर एक हजार पशुओं की बलि चढ़ाने जा रहा है।'' भगवान बुद्ध जब राजभवन पहुँचे तो पाया कि गड़रिये ने जो कहा था वह सच है। यज्ञवेदी के चारों ओर बैठकर ब्राह्मण पुरोहित मंत्रोच्चार कर रहे थे और अजातशत्रु पीतवस्त्र धारण कर यजमान के वेश में बैठे हुए थे। चारों ओर पशुओं की लंबी कतारें लगी हुई थीं तथा उनके पास ही हाथ में नंगी तलवारें लिए वधिक खड़े थे।

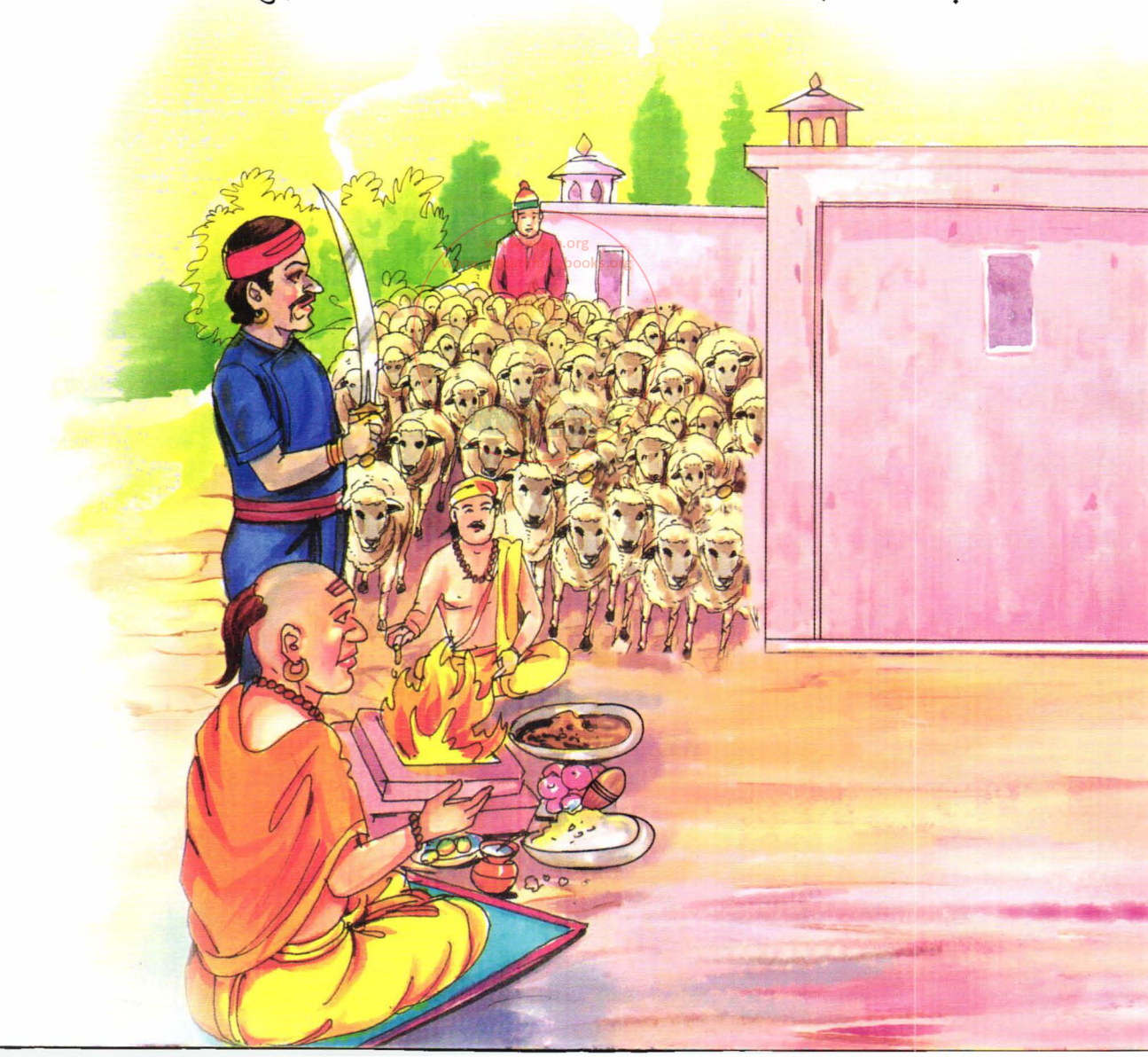

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अजातशत्रु भगवान की अभ्यर्थना हेतु अपने आसन से उठ खड़ा हुआ और बिना पूछे ही इस समारोह के संबंध में बताने लगा। सारी बातें सुनकर भगवान बुद्ध ने भेड़ों के सामने रखी हुई वनस्पतियों में से घास का एक तिनका उठाया और बोले—"राजन! इस तिनके को तोड़कर चीरना तो जरा।"

अजातशत्रु ने वह तिनका तोड़ा और अगले आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। तब भगवानने कहा—"राजन! अब इस टूटे हुए तिनके को जोड़ो तो सही।"

राजा चुप हो गया। तब भगवान ने कहा—"राजन! मैं तुमसे यही बात इस समारोह के संबंध में भी कहना चाहता था। पिता के वध का जो पाप हुआ है, उसे किसी भी प्रयत्न द्वारा मिटाया नहीं जा सकता। जैसे इस टूटे तिनके को नहीं जोड़ा जा सकता।" तथागत से यह कथन सुनकर अजातशत्रु ने वह आयोजन बंद कर दिया।

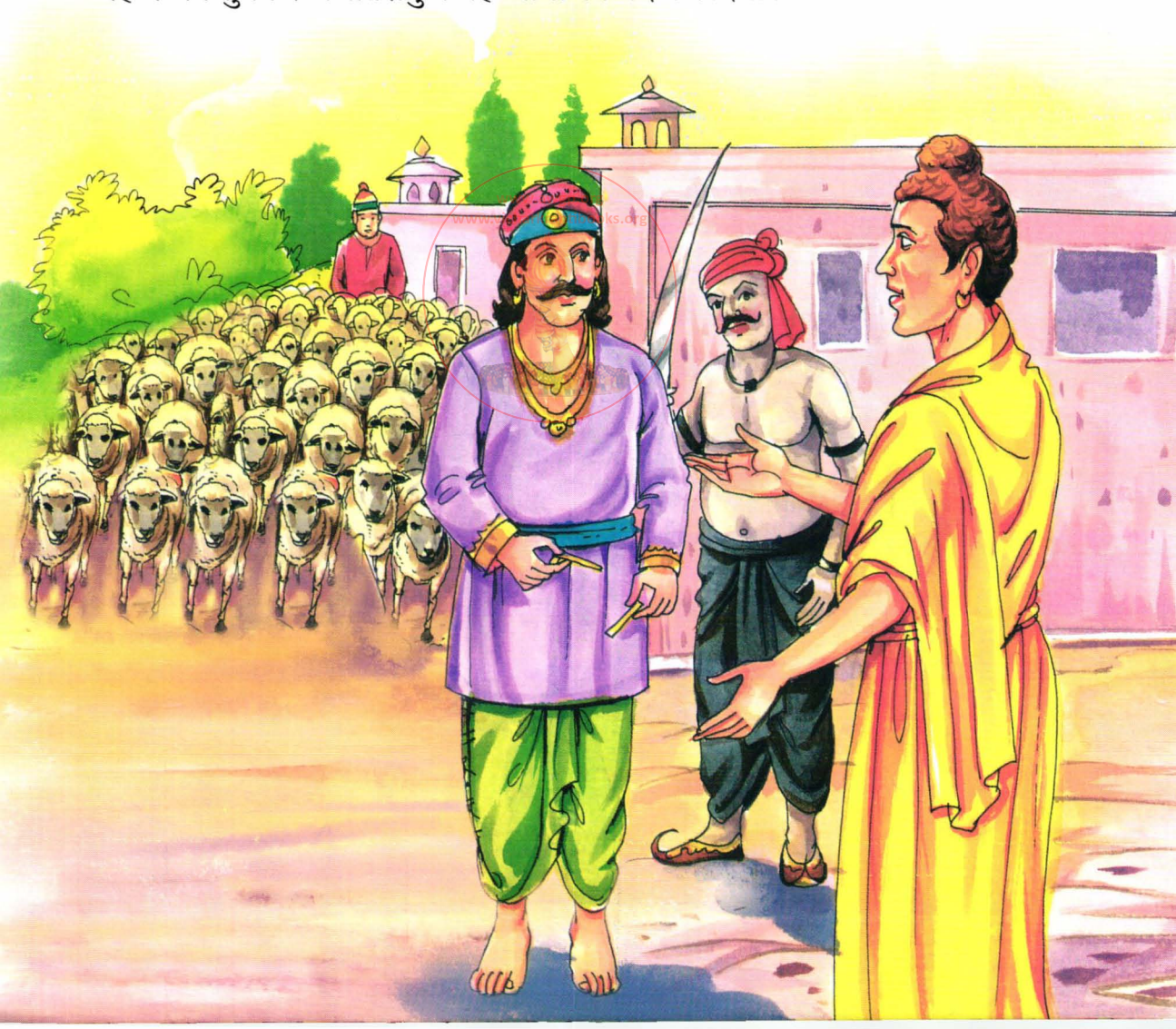

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्ध को कीड़े से प्रेरणा

बुद्ध को तब तक आत्मबोध नहीं हुआ था। वे तपश्चर्या में संलग्न थे। कितनी ही कठिन साधनाएँ उन्होंने की, पर लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हुई। उनका मन अशांत और अस्थिर हो गया। सोचने लगे, इस जीवन से तो अच्छा था महल में रहकर सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन व्यतीत करता। वे वापस लौटने की सोच रहे थे तभी उन्होंने देखा कि निकट ही एक कीड़ा एक वृक्ष पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था। उसने दस बार चढ़ने का प्रयत्न किया पर हर बार असफल रहा। ग्यारहवीं बार चढ़ने में सफल हो गया। बुद्ध को ऐसा लगा जैसे यह दृश्य उन्हीं की प्रेरणा के लिए रचा गया हो। बुद्ध का आत्मविश्वास जग पड़ा और पूरी दृढ़ता के साथ आत्मसाधना के लिए प्रयत्न करने में लग गए और अंतत: अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुए। अपनी सारी शक्ति को सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन में नियोजित करके समाज के लिए उपयोगी कार्य कर सके और महान बन सके।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वस्व दान

आम्रपाली अपने समय की प्रसिद्ध सुंदरी थी। उसके रूप-लावण्य पर अनेकों मुग्ध रहते थे। उसका नृत्य-गायन स्वर्ग की अप्सराओं जैसा था।

एक बार वह भगवान बुद्ध के उपदेश सुनने गई। जीवन की महानता और उसके सदुपयोग की आवश्यकता पर उसने बहुत कुछ सुना। आत्मचिंतन किया। अपने कार्य के लिए उसके मन ने धिक्कारा। वह शेष जीवन को सुधारने का विश्वास करके लौटी।

भगवान की शरण में वह दोबारा गई। उनसे दीक्षा ली और कहा—"जो बीत चुका सो लौटने वाला नहीं। अब जो शेष रहा है, उसी को सुधारना चाहिए।" निर्णय यह हुआ

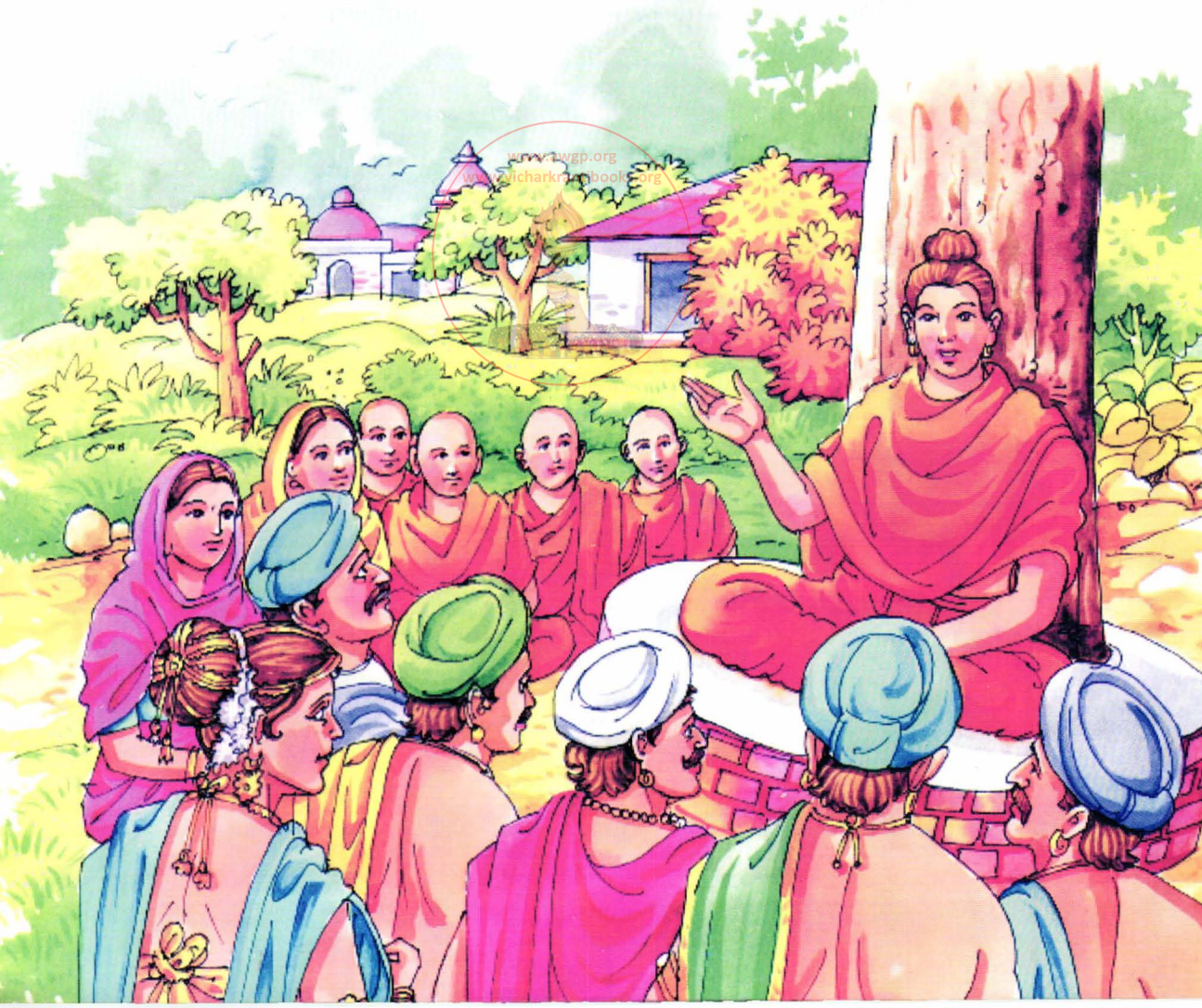

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि उसे बौद्ध समुदाय में शिष्य होकर साधना करनी चाहिए और धर्म प्रचार में लगकर अनेकों को कल्याणकारक मार्गदर्शन कराना चाहिए। बात समझदारी की थी सो आम्रपाली ने अपना ली और भिक्षु समुदाय में सम्मिलित हो गई।

आम्रपाली ने नर्तकी जीवन में बहुत सा धन कमाया था, उसे धर्म प्रचार जैसे पुण्य कार्य में लगा दिया। स्वयं साधनारत होकर पवित्र हुई और धर्म प्रचार के भलाई के कार्य के लिए देश-विदेश में पूरे जीवन प्रयत्न करती रही। नर्तकी आम्रपाली परम साध्वी कहलाई।

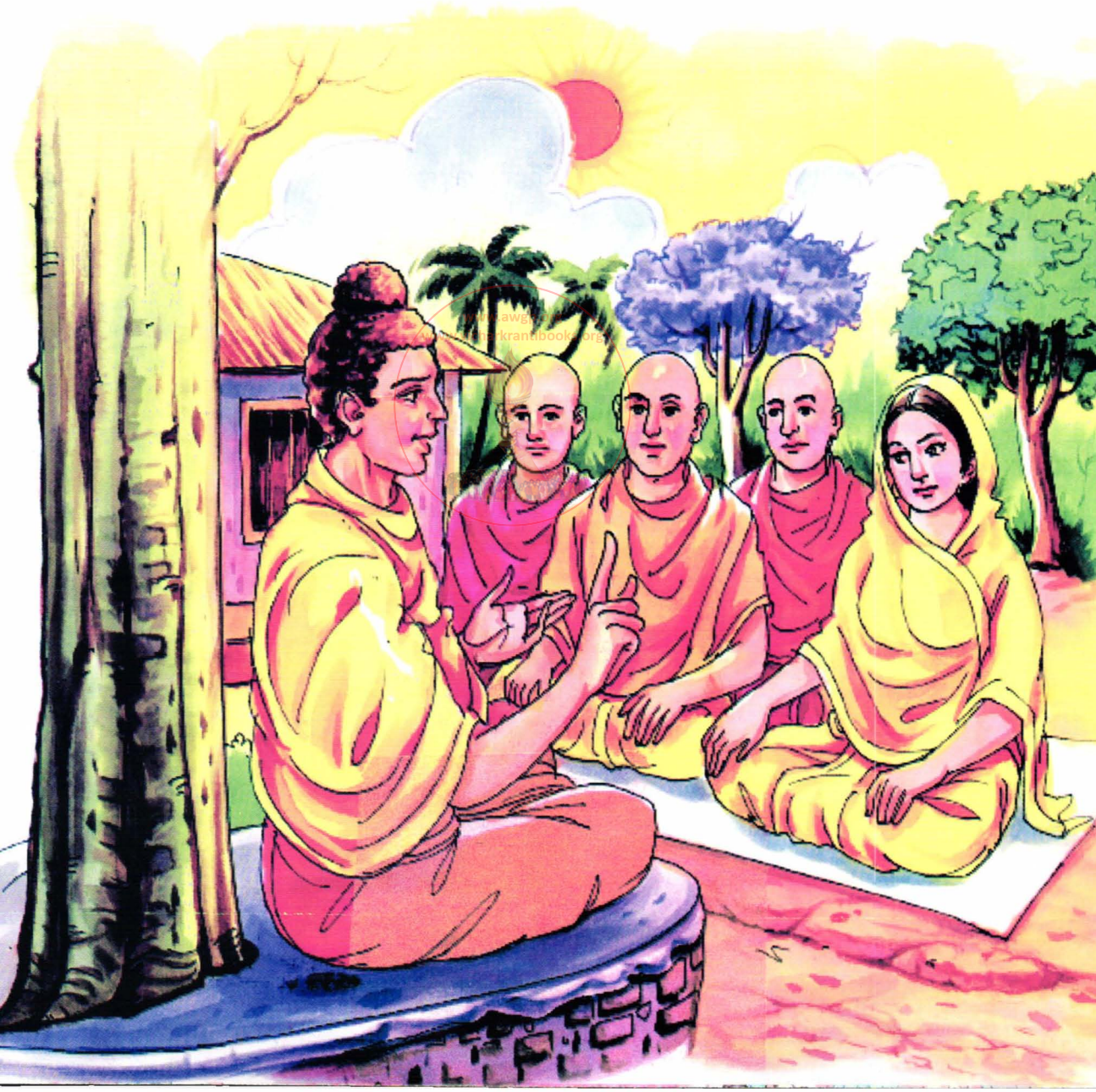

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बेकार कुछ भी नहीं

तथागत अपने शिष्यों के साथ राजा उदयन के घर भिक्षा लेने के लिए गए। अतिथि-सत्कार के उपरांत रानी ने चीवर अर्थात कपड़े भेंट किए। राजा ने हँसते हुए पूछा—"देव! आप इतने चीवरों का क्या करेंगे?" बुद्ध ने कहा—"जिन भिक्षुओं के चीवर फट जाया करेंगे, उन्हें देते रहेंगे।" राजा ने फिर पूछा—"उन फटे चीवरों का क्या होगा?" उत्तर मिला उनके टुकड़े काटकर बिछोने बना लेंगे। राजा ने फिर पूछा—"पुराने गद्दी का क्या होगा?" उत्तर मिला—"झाड़न में काम लेंगे। अंततः उनके भी निरर्थक हो जाने पर किसी खेत में गाड़कर खाद बना दिया जाएगा।" उदयन बुद्ध संघ की कार्य-नीति से बहुत प्रभावित हुआ और उन्होंने ऐसे सबसे अच्छे सदुपयोग के लिए अपना सारा खजाना खाली कर दिया।

बुद्ध भगवान ने सिखाया कि कुछ भी बेकार नहीं जाना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मन की पवित्रता

एक बार बुद्ध भगवान और उनका एक शिष्य जंगल में से होकर जा रहे थे। भगवान बुद्ध को प्यास लगी। शिष्य आनंद को समीप के झरने से पानी लेने भेजा। उधर थोड़ी देर पहले ही कुछ पशु नहाए थे जिससे पानी गंदा हो गया था। आनंद गंदा पानी देखकर लौट आए। स्थिति बताते हुए कहा—''नदी से पानी ले आता हूँ।''

बुद्ध ने फिर उसी झरने पर पानी लेने भेजा किंतु पानी गंदला ही था। तीन बार भेजने और वापस आने के बाद चौथी बार जब आनंद गए तो कीचड़ साफ हो गई थी क्योंकि कीचड़ नीचे तली में बैठ गई थी। आनंद स्वच्छ जल लेकर तथागत के पास आए।

पानी हाथ में लेते हुए भगवान बुद्ध ने कहा—''आनंद, हमारे जीवन का जल भी कुविचारों के पशु लोटने से प्राय: गंदा होता रहता है और हम भाग खड़े होते हैं। यदि हम भागें नहीं, मन के शांत होने की प्रतीक्षा करें तो सब कुछ साफ हो जाएगा झरने के पानी की तरह।'' व्यक्ति को धैर्य से काम लेना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विनम्रता का पाठ

तथागत बोधिवृक्ष को साष्टांग दंडवत कर रहे थे।

शिष्यों ने आश्चर्य से पूछा—"आप तो पूर्ण हैं। फिर इस तुच्छ वृक्ष को इतना सम्मान क्यों दे रहे हैं?"

बुद्ध ने कहा—"आप सबको यह बताने के लिए कि जो झुकता है, वही महान होता है। अहंकारी पुरुष झुकना नहीं जानते। आप लोग भी अहंकारी बनकर नमन करना भुला न दें।"

अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। अहंकारी का पतन अवश्य होता है। अत: अहंकार कभी न करें।

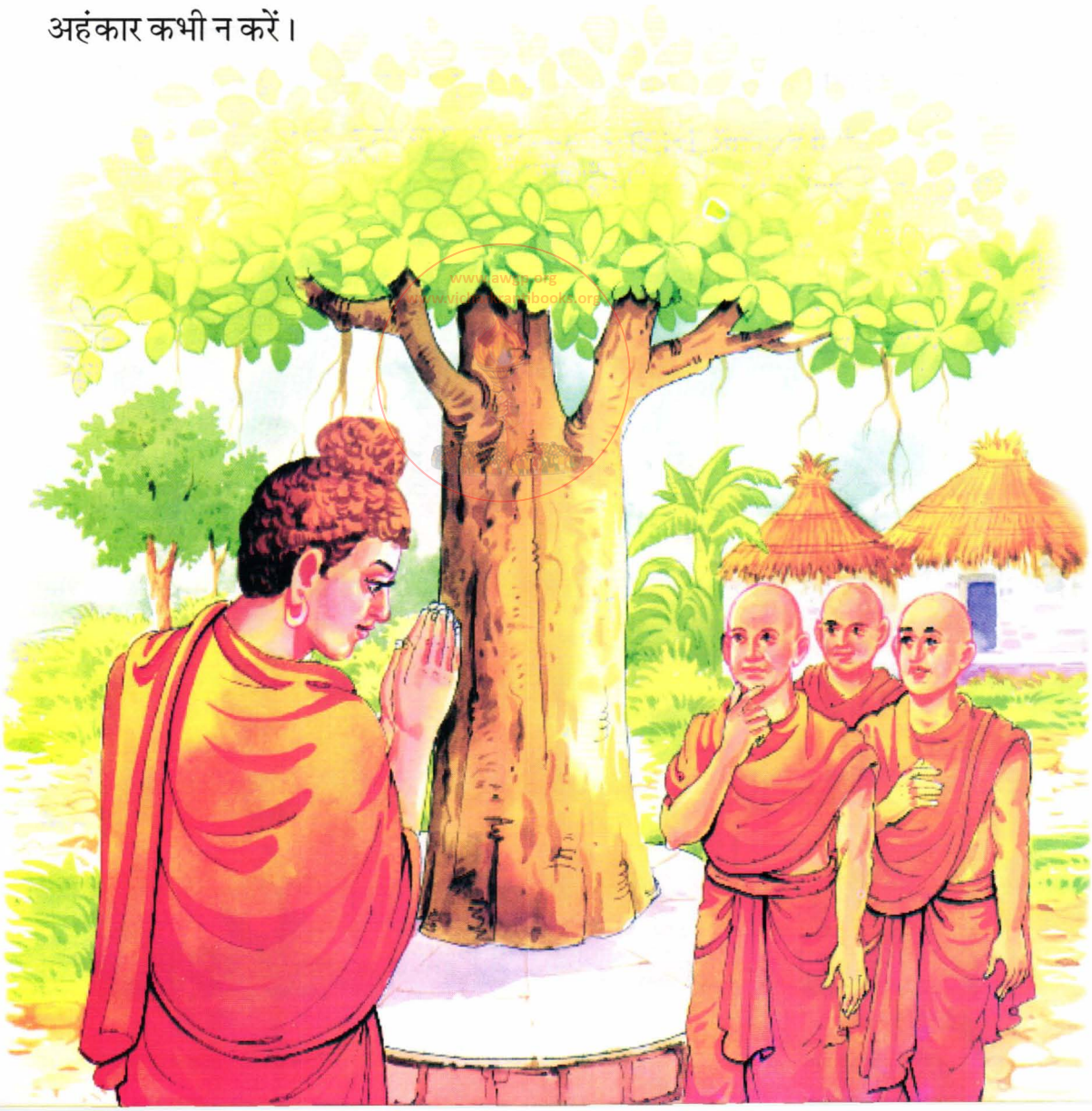

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शत-प्रतिशत दान

एक बार तथागत को शिष्यों को रहने तथा शिक्षा देने के स्थान का निर्माण करना था। इसके लिए उन्होंने सभी व्यक्तियों से धन से मदद करने को कहा और आवश्यक धनराशि जमा हो गई।

तथागत ने कोषाध्यक्ष से पूछा—"किसने सबसे बड़ी राशि दी है?" उसने बताया—"एक बुढ़िया ने जिंदगी भर में एक रुपया जमा किया था। उसने अपनी कमाई का शत-प्रतिशत दान कर दिया। जिसके पास विपुल धन था, उन्होंने उसमें से सैकड़ों रुपये भर दिए थे, जो उनकी पूँजी का थोड़ा सा ही हिस्सा था।" विहार पर शिलालेख लगा। उसमें बुढ़िया की उदारता को श्रद्धापूर्वक सराहा गया।

दान में श्रद्धा का महत्त्व होता है धन का नहीं।

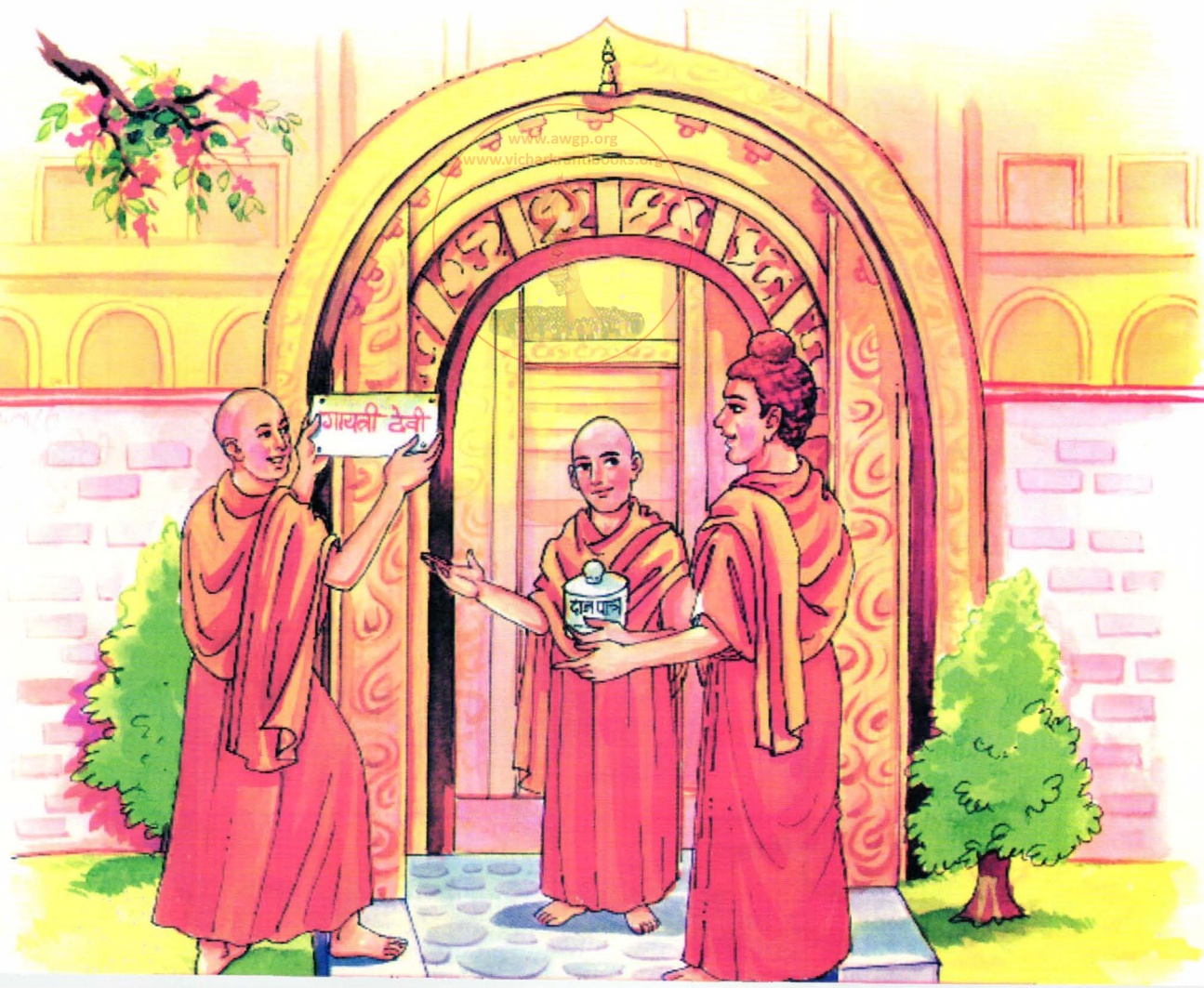

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहनशीलता का गुण

एक बार भगवान बुद्ध ने भैंसे की योनि में जन्म लिया। जंगली भैंसा होने पर भी भगवान बड़े शांत थे। किसी से कुछ न कहते। उनके सीधेपन के कारण इन्हें एक बंदर बड़ा तंग करता। कभी उनकी पीठ पर कूदता, कभी पूँछ खींचता, तो कभी सींग पकड़कर घुमाता। फिर भी भैंसा शांत ही रहता। एक दिन देवताओं ने भैंसे से कहा—''यह बंदर तुम्हें तंग करता है। इसे दंड देना चाहिए।''

देवताओं की बात सुनकर भैंसे ने कहा—''मैं बंदर की दुष्टता समझता हूँ और एक झटके से उसका अंत कर देने में भी समर्थ हूँ। लोग अपने से शक्तिशाली का अपराध तो मजबूरी में ही सहते हैं, पर सहनशीलता तो अपने से निर्बल का अपराध सहन करने में है।''

सहनशीलता व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ गुण है।

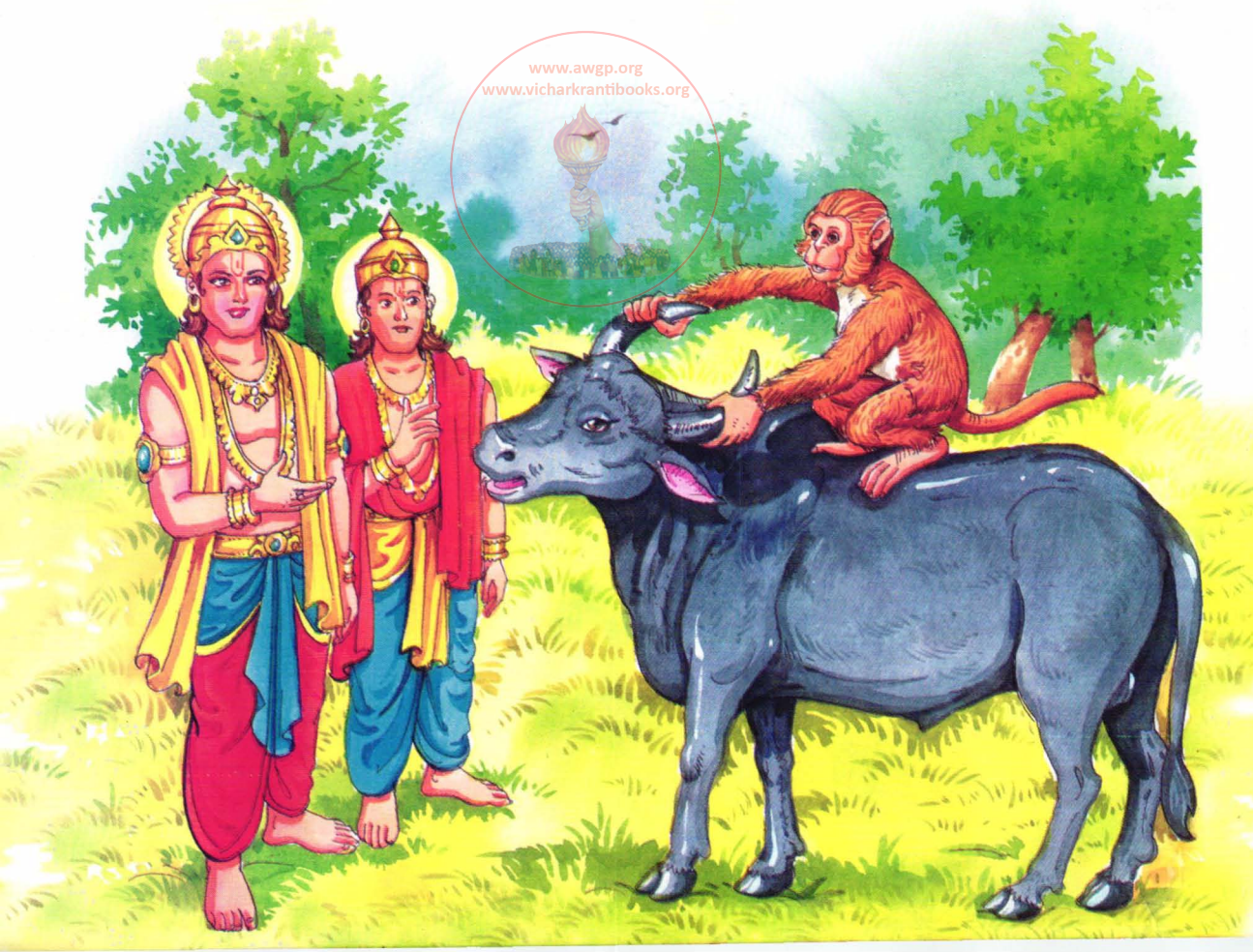
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नैतिक आचरण

कमल सरोवर के निकट बैठे तथागत शांत मुद्रा में, विभोर से गंधपान कर रहे थे।

तभी एक देवकन्या ने कहा—''तुम बिना कुछ दिए ही गंध का पान कर रहे हो। तुम गंध चोर हो।'' तथागत ने देखा और सिर झुका लिया। तभी एक ग्राम्य बालिका आई और निर्दयतापूर्वक कमल पुष्प तोड़ने लगी। तालाब का पानी भी अस्वच्छ कर दिया। देवकन्या अभी भी खड़ी थी। उसे मौन देखकर तथागत ने कहा—''मैंने तो केवल गंधपान ही किया था। तब भी तुमने मुझे चोर कहा और यह तो कमल पुष्प तोड़ रही है, सरोवर को अस्वच्छ भी कर रही है। तब भी तुम इसे कुछ नहीं कह रहीं ?''

देवकन्या मुस्कराई। सहज स्मृति में से स्नेह भरा स्वर फूटा—''यह अबोध है, अज्ञानी है। क्या उचित है, क्या अनुचित यह वह नहीं जानती। उसके कार्य-कलाप सहज संचालित हैं। पर आप ज्ञानी हैं। नीति मर्मज्ञ हैं। धर्म के ज्ञाता हैं। क्या श्रेय है और क्या प्रेय, यह आप भली प्रकार जानते हैं। आपकी लघु से लघु क्रिया भी औचित्य एवं अनौचित्य की कसौटी पर कसकर ही क्रियान्वित होनी चाहिए।'' पुनः तथागत का शीश अवनत हो गया।

इस बार शीश ही नहीं, हृदय भी लज्जित हो आया था। उन्होंने अनुभव किया—''शिक्षित और विचारशील लोग जब तक नैतिक आचरण नहीं करते, सामान्य प्रजा तब तक सुधरती नहीं।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संघाराम का कुलपति कौन ?

एक बड़े बौद्ध संघाराम के लिए कुलपति की नियुक्ति की जानी थी। उपयुक्त विद्या और विवेक वाले आचार्य की छाँट का ऊहापोह चल रहा था। तीन सत्पात्र सामने थे, उनमें से किसे प्रमुखता दी जाए यह प्रश्न सामने था। चुनाव का काम महाप्राज्ञ मौद्गल्यायन को सौंपा गया। तीनों को प्रवास पर जाने का निर्देश हुआ। कुछ दूर पर उस मार्ग पर काँटे बिछा दिए गए थे। संध्या होने तक तीनों उस क्षेत्र में पहुँचे। काँटे देखकर रुके। क्या किया जाए, इस प्रश्न के समाधान में एक ने रास्ता बदल लिया। दूसरे ने छलाँगें लगाकर पार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाई। तीसरा रुककर बैठ गया और काँटे बुहारकर रास्ता साफ करने लगा, ताकि पीछे आने वालों के लिए वह मार्ग निष्कंटक रहे। भले ही अपने को देर लगे।

परीक्षक मौद्गल्यायन समीप की झाड़ी में छिपे बैठे थे। उनने तीनों के कृत्य देखे और परीक्षाफल घोषित कर दिया। दूसरों के लिए रास्ता साफ करने की विधा सार्थक मानी गई और कुलपति की जिम्मेदारी उसी के कंधे पर गई। मौद्गल्यायन ने कहा —''संघाराम में सत्प्रवृत्तियों की परंपरा वही डाल सकेगा, जो स्वयं सबका ध्यान रखे और अपने आचरण से प्रेरणा उभारने की क्षमता रखता हो।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निराश न लौटाओ

भगवान बुद्ध मृत्यु-शय्या पर पड़े थे। उनकी जीवन-ज्योति के समाप्त होने में कुछ ही देर थी। सुभद्र नामक साधु ने यह समाचार सुना तो वह अपनी धर्म संबंधी कुछ शंकाओं को निवारण करने के उद्देश्य से उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। पर आनंद ने, जो कुटी के द्वार पर स्थित था उसे भीतर जाने से रोका और कहा—"भगवान को इस समय कष्ट देना उचित न होगा।" पर सुभद्र बराबर आग्रह करता रहा कि उसे भगवान का दर्शन कर लेने दिया जाए।

बुद्ध जी भीतर पड़े हुए दोनों की बातों को थोड़ा-थोड़ा सुन पा रहे थे और वहीं से कहा—"आनंद! सुभद्र को भीतर आने दो। वह ज्ञान प्राप्ति की इच्छा से आया है, मुझे कष्ट देने नहीं आया।" सुभद्र ने जैसे ही भीतर जाकर करुणा की उस शांत मूर्ति को देखा वैसे ही बुद्ध जी के उपदेश उसके हृदय में प्रविष्ट हो गए और वह प्रव्रज्या लेकर बौद्ध भिक्षु बन गया। बुद्ध भगवान ने शरीरांत होते हुए भी किसी ज्ञान के अभिलाषी को निराश नहीं किया।

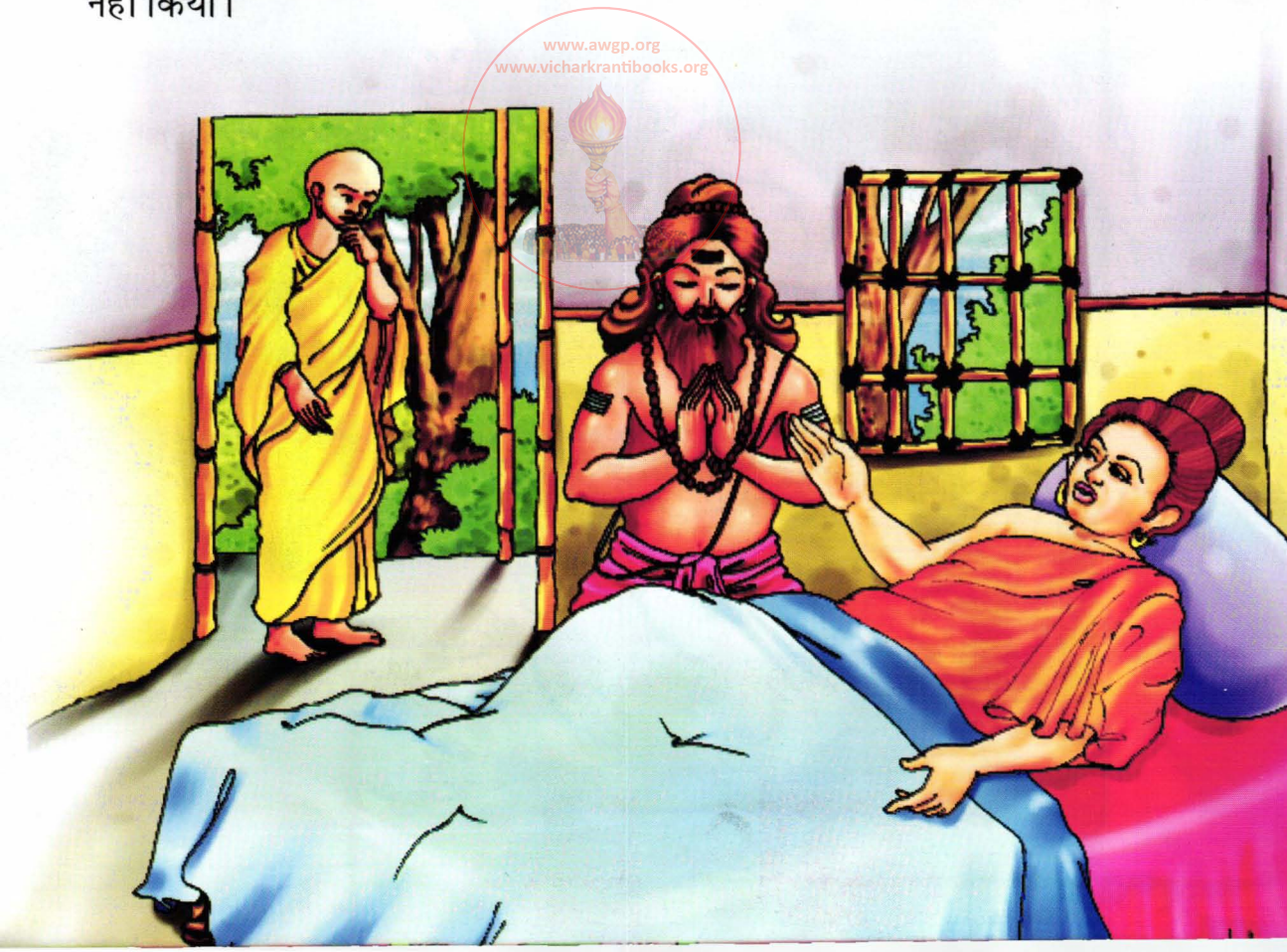
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंदे कमंडल में खीर

भगवान बुद्ध के पास एक सेठ आत्मज्ञान प्राप्ति की आकांक्षा से पहुँचा। पहुँचकर आने का मंतव्य स्पष्ट किया। दूसरे दिन उसके घर पर आकर ही उत्तर देने का आश्वासन देकर बुद्ध ने उसे विदा किया। स्वयं भगवान बुद्ध घर पर आ रहे हैं, यह सोचकर सेठ ने अच्छी खीर बनवाई। कमंडल लिए दूसरे दिन तथागत पहुँचे। "भगवन्! आपके लिए खीर तैयार की है। प्रसाद ग्रहण करें"—सेठ ने निवेदन किया। बुद्ध ने खीर के लिए अपना कमंडल आगे कर दिया। सेठ खीर देने के लिए आगे बढ़ा। ध्यान से देखा तो उसमें गोबर भरा हुआ था। बोला—"देव! इसमें तो पहले से गोबर भरा हुआ है। इस पात्र में देने पर तो खीर भी बेकार हो जाएगी।" तथागत हँसे और बोले—"वत्स! तुम्हारे कल के प्रश्न का यही उत्तर है। आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए पहले पात्रता विकसित करो, अपने कषाय-कल्मषों का परिशोधन करो। आत्मज्ञान जैसी महान उपलब्धि पात्रता विकसित हुए बिना प्राप्त नहीं हो सकती।"

उपासना का लाभ तब तक नहीं मिल सकता जब तक साधना की, आत्मपरिष्कार की प्रक्रिया बंद है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निष्ठा की भूख

शौरपुच्छ नामक बनिक ने एक बार भगवान बुद्ध से कहा—"भगवन्! मेरी सेवा स्वीकार करें, मेरे पास एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ हैं, वे सब आपके काम आएँ।" बुद्ध भगवान कुछ न बोले, चुप-चाप चले गए।

कुछ दिन बाद वह पुनः तथागत की सेवा में उपस्थित हुआ और कहने लगा—"देव! यह आभूषण और वस्त्र लें। दुखियों के काम आएँगे। मेरे पास अभी बहुत सा द्रव्य शेष है।" भगवान बुद्ध बिना कुछ कहे वहाँ से उठ गए। शौरपुच्छ बड़ा दुखी था, सोचने लगा कि वह गुरुदेव को किस तरह प्रसन्न करे? कुछ समय बाद वैशाली में महान धर्म सम्मेलन था। हजारों व्यक्ति आने थे। बड़ी व्यवस्था जुटानी थी। सैकड़ों शिष्य और भिक्षु काम में लगे थे। आज शौरपुच्छ ने किसी से कुछ न पूछा और काम में जुट गया। रात बीत गई सब लोग चले गए, पर शौरपुच्छ बेसुध कार्य-निमग्न रहा। बुद्ध भगवान उसके पास पहुँचे और बोले—"शौरपुच्छ! तुमने प्रसाद पाया या नहीं?" शौरपुच्छ का गला रुँध गया। भाव-विभोर होकर उसने तथागत को साष्टांग प्रणाम किया। भगवान बुद्ध ने कहा—"वत्स! परमात्मा किसी से धन और संपत्ति नहीं चाहता, वह तो निष्ठा का भूखा है। लोगों की निष्ठाओं में ही वह रमण किया करता है। देखो यह आज तुमने स्वयं जान लिया।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम और सहयोग

वन प्रदेश में भयंकर आंधी आने पर वे वृक्ष उखड़ जाते हैं जो अकेले खड़े होते हैं। भले ही वे कितने ही विशाल क्यों न हों। इसके विपरीत घने उगे हुए पेड़ एकदूसरे के साथ सटकर रहने के कारण उस दबाव को सहज ही सहन कर लेते हैं। अंधड़ उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाते। यह उदाहरण देते हुए भगवान बुद्ध ने अपने प्रवचन में कहा—''परस्पर स्नेह की सघनता मनुष्यों को इसी तरह नष्ट होने से बचाती और विकास का अवसर प्रदान करती है। संघारामों (भगवान बुद्ध के आश्रम) में सघन पारिवारिक स्नेह का अभ्यास इसीलिए कराया जाता है।''

भगवान बुद्ध का यह उपदेश परिवार पर भी लागू होता है। परिवार में सभी सदस्यों को आपस में स्नेह-आत्मीयता से रहना चाहिए। उन्हें अपनी बात एक दूसरे को बतानी चाहिए। इससे मन भी हलका होता है और मार्गदर्शन भी मिलता है। उनका बड़े से बड़ा संकट भी आसानी से दूर हो जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिशा ज्ञान

एक बार गौतम बुद्ध राजगृह पथ पर जा रहे थे। उन्होंने देखा, एक गृहस्थ भीगे वस्त्र पहने सभी दिशाओं को नमस्कार कर रहा था। बुद्ध ने पूछा—"महाशय! इन छह दिशाओं की पूजा का क्या अर्थ है? यह पूजा क्यों करनी चाहिए?"

गृहस्थ बोला—"यह तो मैं नहीं जानता।"

बुद्ध ने कहा—"बिना जाने पूजा से क्या लाभ होगा?"

गृहस्थ ने कहा—"भंते! आप ही कृपाकर बतलाएँ कि दिशाओं की पूजा क्यों करनी चाहिए?"

तथागत बोले—"पूजा करने की दिशाएँ भिन्न हैं। माता-पिता और गृहपति पूर्व दिशा हैं, आचार्य दक्षिण, स्त्री-पुत्र पश्चिम और मित्र आदि उत्तर दिशा हैं। सेवक नीची तथा श्रमण ब्राह्मण ऊँची दिशा है। इनकी पूजा से लाभ होता है।"

गृहस्थ बोला—"और तो ठीक भंते! परंतु सेवकों की पूजा कैसे? वे तो स्वयं मेरी पूजा करते हैं?"

बुद्ध ने समझाया—"पूजा का अर्थ हाथ जोड़ना, सिर झुकाना नहीं। सेवकों की सेवा के बदले उनके प्रति स्नेह-वात्सल्य ही उनकी पूजा है।"

गृहस्थ ने कहा—"आज आपने मुझे सही दिशा का ज्ञान कराया।"

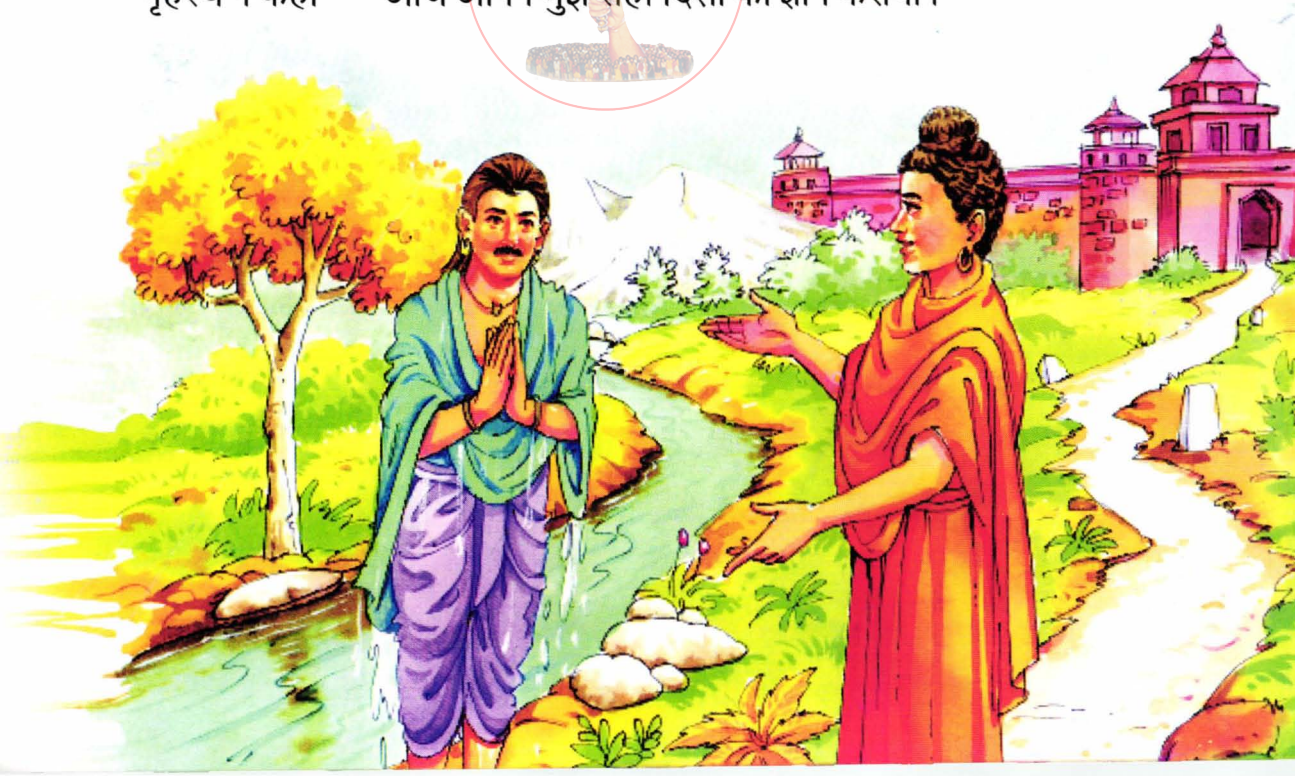

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान की निरंतर खोज

भगवान बुद्ध से आनंद ने पूछा—''देव! आप तो ज्ञान के भंडार हैं। आपको जो कुछ ज्ञान है क्या आपने सब कुछ हमें बता दिया?''

बुद्ध ने तीन प्रश्न उन्हीं से पूछे ''बताओ इस जंगल में भूमि पर कितने सूखे पत्ते पड़े होंगे? फिर हम जिस वृक्ष के नीचे खड़े हैं, उस पर चिपके सूखे पत्तों की संख्या कितनी होगी? इसके बाद अपने पैरों तले जो अभी पड़े हैं ये कितने हो सकते हैं?''

आनंद इन प्रश्नों का उत्तर देने की स्थिति में नहीं थे। मौन तोड़ते हुए तथागत ने स्वयं ही कहा—''ज्ञान का विस्तार इतना है जितना इस वन प्रदेश में बिछे हुए सूखे पत्तों की संख्या। मैंने उतना जाना जितना ऊपर वाले वृक्ष का पतझड़। इसमें भी तुम लोगों को उतना ही बताया जा सका जितना कि अपने पैरों के नीचे कुछेक पत्तों का समूह पड़ा है।''

इतना जानलो कि ज्ञान का कोई अंत नहीं। इस बात को समझते हुए उसे निरंतर खोजते रहने और जितना मिल सके उतना समेटते रहने में ही बुद्धिमत्ता है। आनंद को अपने प्रश्न का उत्तर मिलने पर बहुत प्रसन्नता हुई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बचत ही काम आई

अर्थवसु ने व्यापार में व्यापक लाभ के अनंतर भी कभी वैभव का जीवन न स्वयं जिया न अपने कुटुंबीजनों को विलासी होने दिया। उन्होंने परिजनों के पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, वेशभूषा के सामान्य नागरिक कर्त्तव्यों की कभी अवहेलना नहीं की, इसीलिए उनको परिजनों से सदा सम्मान ही मिला।

परिवर्तन का ही नाम सृष्टि है, गति है, जीवमा है। काल केइन थपेड़ों से आज तक न बचा है कोई राजा और न कोई रंक। कुछ वर्षों के बाद धरती के कंठ में एक भी बूँद न गिरी तो फिर नहीं ही गिरी। सूखे के कारण राजगृह श्मशान की-सी भयंकरता में बदल गया। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई और लोग भूखों मरने लगे।

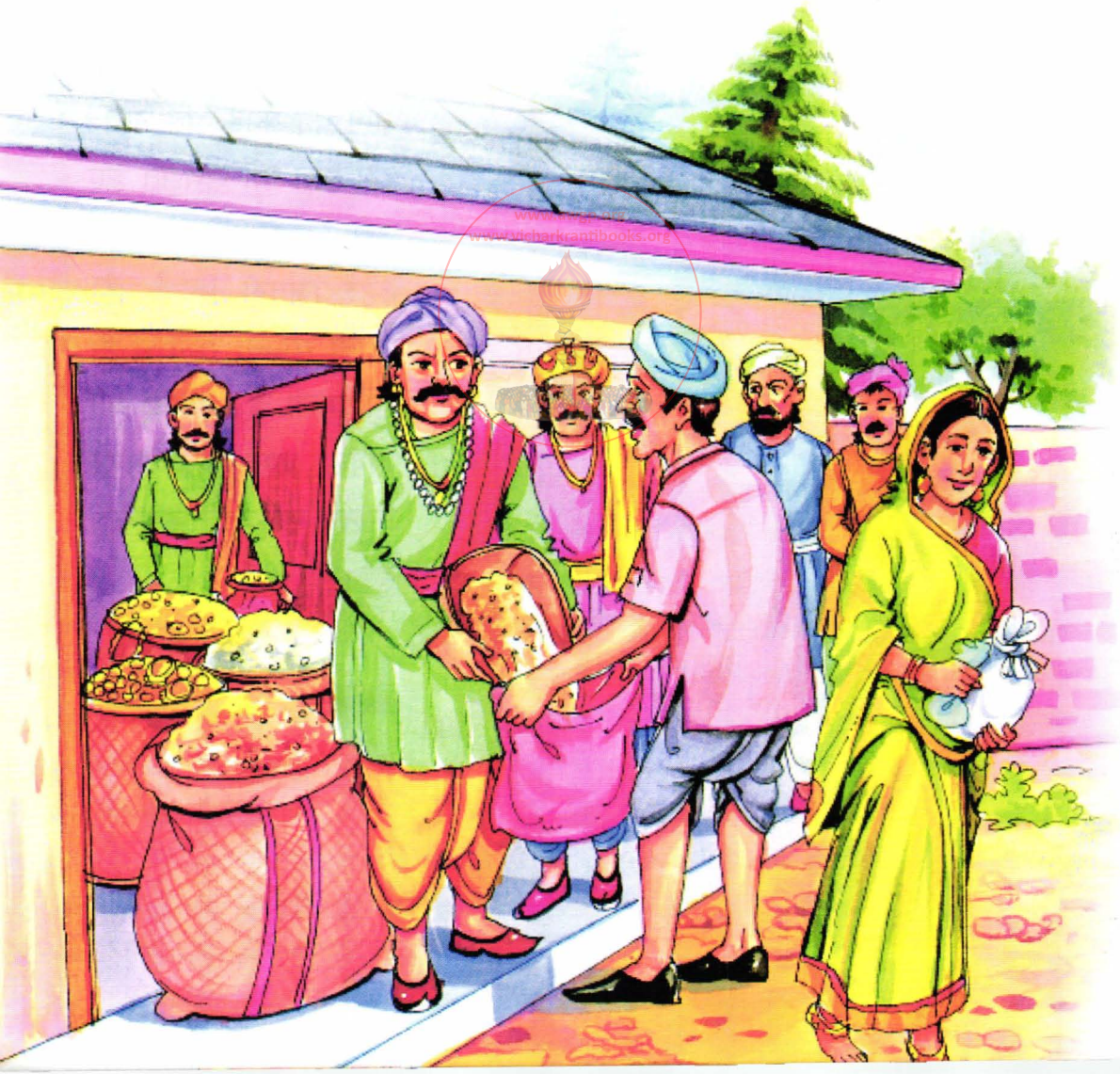

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थवसु मानवीय संवेदना से सिक्त हो उठे। राजगृह के नागरिकों के लिए अर्थवसु ने अपने द्वार खोल दिए। सारी संपत्ति गतिमान हो उठी। जिन अर्थवसु को किसी ने एक कौड़ी खरच करते नहीं देखा था, युगपीड़ा ने उनके हृदय-कपाट पूरी तरह खोल दिए। उनका सर्वस्व स्वाहा हो गया किंतु उनके हृदय ने कभी भी किसी को यह अनुभव नहीं होने दिया कि राजगृह असहाय है, अनाश्रित है।

भगवान बुद्ध ने सुना तो वे गद्‌गद हो उठे। भगवान बुद्ध आज स्वयं ही अर्थवसु के दर्शनों के लिए चल पड़े।

सेवक ने पुकारा—"आर्य श्रेष्ठ! उठिए! तथागत आज आपके द्वार पर आए हैं।" अर्थवसु ने आँखें खोलीं। तथागत की आँखे भर आईं। उनके मुँह से इतना ही निकला—"अर्थवसु! तुम सच्चे अर्थों में अपरिग्रही थे, तुम्हारे त्याग ने आज सारे राजगृह की रक्षा कर ली।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवा-सहायता का महत्त्व

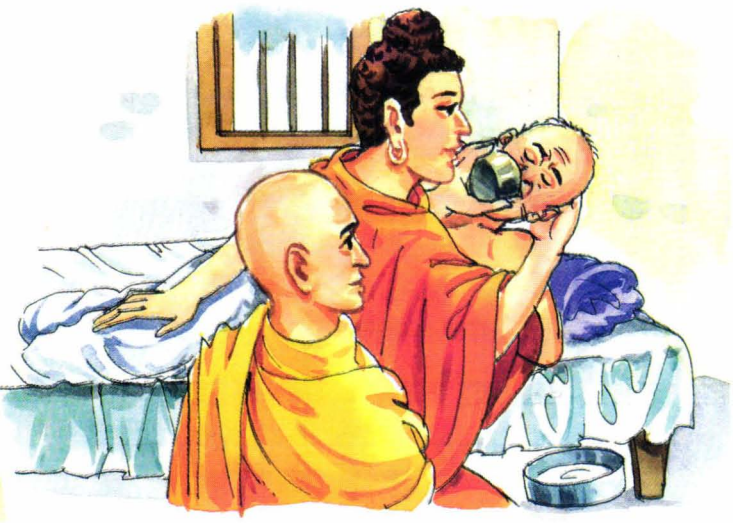

महाविहार में भिक्षुओं की स्थिति का निरीक्षण करते हुए भगवान बुद्ध एक कुटिया में पहुँचे तो उसमें रहने वाला साधक रुग्ण अवस्था में मल-मूत्र से सना पड़ा मिला।

पूछने पर मालूम हुआ कि वह दस्त और उल्टी के कारण बीमार है। कोई दूसरा उसकी सहायता करने नहीं आता।

तथागत ने आनंद से जल माँगकर साधक को स्वच्छ किया, उठाकर बिस्तर पर सुलाया और चिकित्सा की व्यवस्था की। साथ ही निकटवर्ती कुटियाओं में रहने वाले भिक्षुओं को बुलाकर पूछा—"कोई उस रोगी की सहायता क्यों नहीं करता?"

उत्तर में सभी ने एक ही बात कही—"वह कभी किसी के काम नहीं आता, सदा अकेला रहता और उपेक्षा भाव बरतता है। फिर कोई क्यों उसकी सहायता करे।"

तथागत ने कहा—"अज्ञान का बदला ज्ञान से होता है और संकुचित वृत्ति का सुधार उदारता से होता है, क्या तुम इतना भी नहीं जानते। क्या तुमने नहीं सुना कि दूसरों की सेवा-सहायता बदले के लिए नहीं अपनी ही करुणा को विकसित करने के लिए की जाती है।"

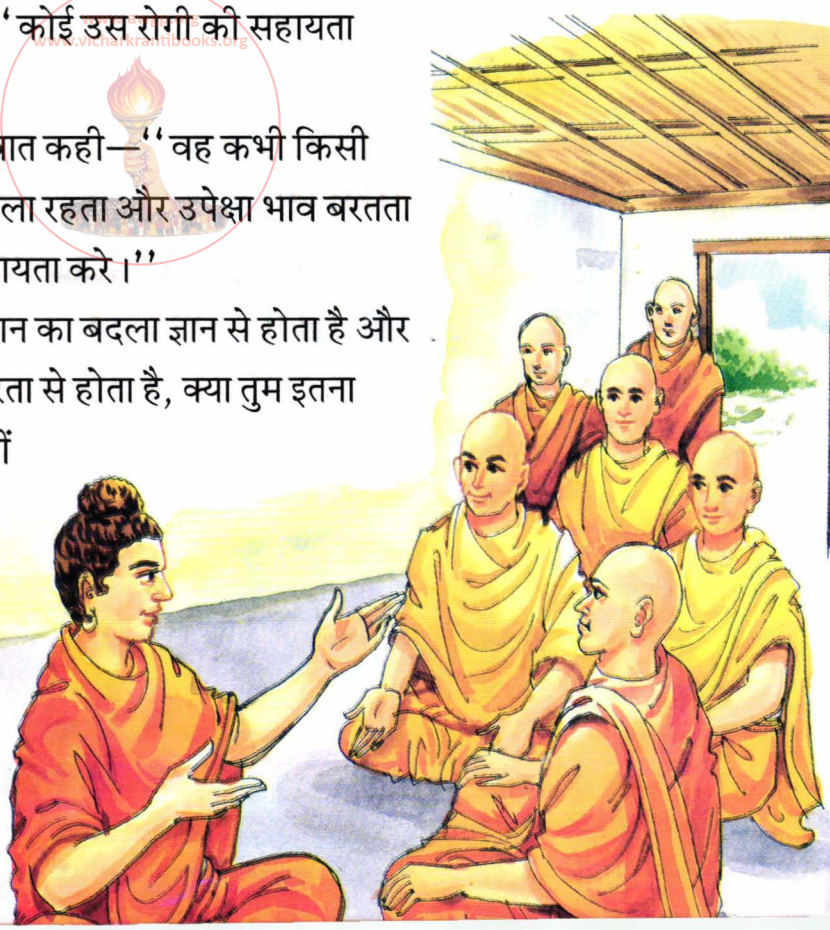

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संघ की शक्ति का आधार

एक बार जब भिक्षुओं के संघ में इस बात पर विवाद उत्पन्न हुआ कि प्रथम आसन, प्रथम भोजन किसको दिया जाए तो किसी ने क्षत्रिय, किसी ने ब्राह्मण, किसी ने वैश्य कुल से भिक्षु बनने वालों को प्रथम स्थान देने का सुझाव दिया। पर बुद्ध जी ने इसको अनुचित मानकर कहा—''भिक्षुओ! जाति या कुल के आधार पर किसी को सम्मान नहीं दिया जाता। इसलिए जिसने जितना पहले संन्यास लिया या संघ में सम्मिलित हुआ, वह उतना ही मुख्य माना जाएगा, चाहे वह किसी भी जाति का हो।''

भगवान बुद्ध के इन स्वाभाविक और न्याय पर आधारित नियमों के कारण बौद्ध भिक्षु संघ की शक्ति बहुत बढ़ गई और उनमें से ऐसे परमार्थी और त्यागी प्रचारक निकले जिन्होंने समस्त भारत ही नहीं दूर-दूर देशों में भी बौद्ध धर्म का डंका बजा दिया। आज भी उसका प्रभाव बहुत अंशों में दिखाई पड़ रहा है।

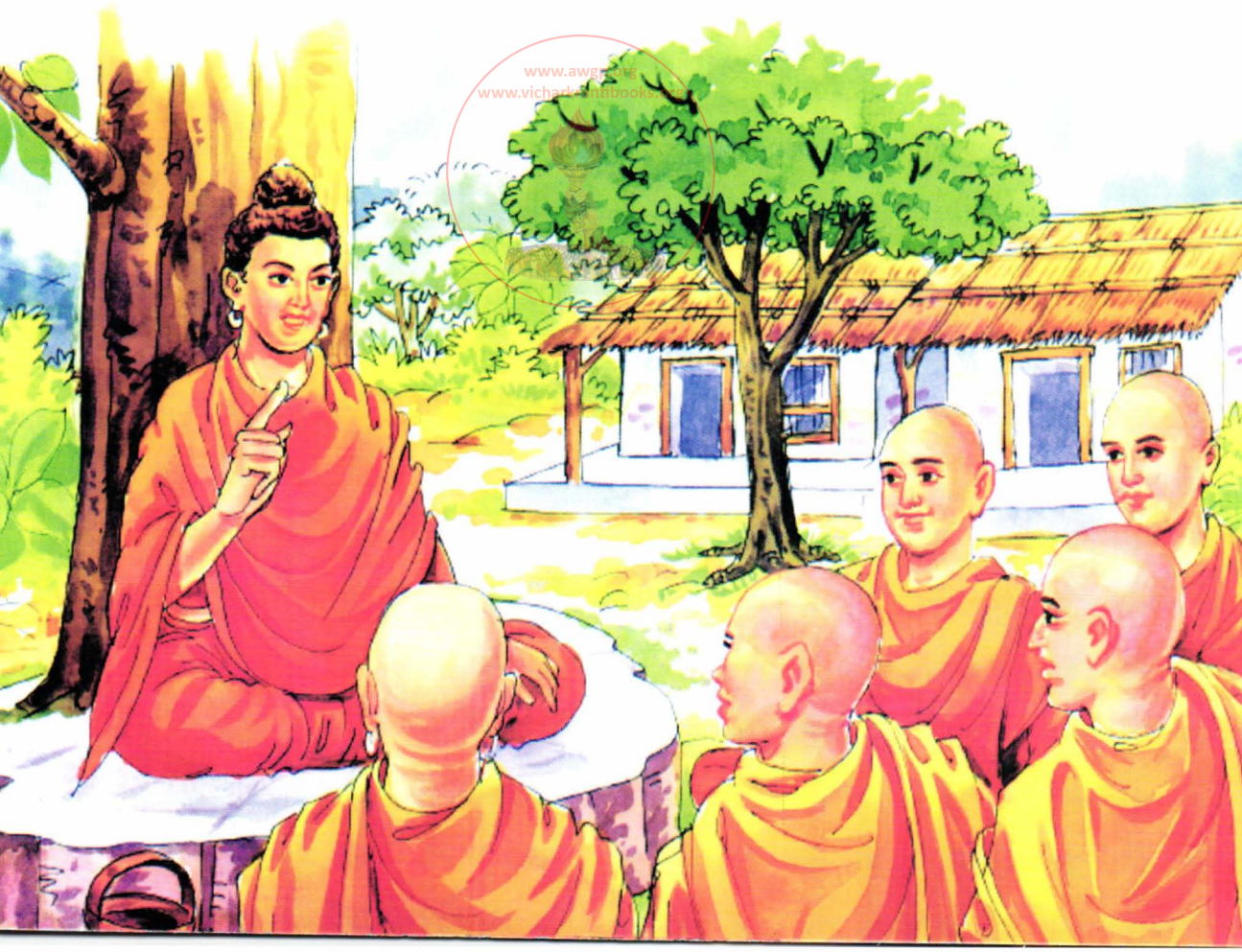

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन्म और मृत्यु

गौतमी का इकलौता पुत्र मर गया था। शोक से विह्वल होकर वह लाश को लिए हुए भगवान बुद्ध के पास पहुँची। उसे आशा थी कि तथागत बालक को पुनः जीवित कर देंगे।

बुद्ध ने गौतमी को समझाते हुए कहा—"किसी ऐसे घर से थोड़ा जल माँग लाओ, जिसके घर में कभी कोई मृत्यु न हुई हो। उस जल को अभिमंत्रित करके तुम्हारे पुत्र का अभिसिंचन करूँगा और वह पुनः जीवित हो उठेगा।" गौतमी जल प्राप्त करने के लिए द्वार-द्वार पर घूमने लगी, पर कोई घर ऐसा न मिला, जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो। निराश होकर वह वापस लौट आई। तथागत ने कहा—"भद्रे! तुमने देखा, इस संसार में कोई घर ऐसा नहीं जिसमें किसी की मृत्यु न हुई हो। इसी तरह कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जिसे मरना न पड़े। आज या कल सभी अपने-अपने समय पर मरते हैं, फिर उस अटल प्रकृति के नियम को जानते हुए हम लोगों को क्यों किसी के लिए शोक करना चाहिए।"

गौतमी का बोध जाग पड़ा। वह मृतपुत्र का संस्कार करके घर लौट गई। उसका शोक विवेक होने पर शांत हो गया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तृष्णा से बचो

श्रोणिक नाम के एक राजा थे। वे सदैव किसी न किसी बात से अशांत रहते थे। उन्हें नींद भी कम आती थी और कभी भी संतुष्टी नहीं होती थी। इस कारण उदास रहते थे और सदा उन्हें भय जैसा लगा रहता था।

एक दिन वे शांत और प्रसन्न रहने का कोई उपाय पूछने भगवान बुद्ध के पास गए। प्रवचन चल रहा था, सभी भिक्षु अति प्रसन्न मुद्रा में उसे सुन रहे थे। सभी के चेहरे पर तेजस्विता और आनंद की पुलकन थी।

राजा की जिज्ञासा को समझते हुए तथागत ने उसी प्रवचन में यह तथ्य जोड़ दिया कि मनुष्य दुखी या प्रसन्न किन कारणों से रहता है। उन्होंने कहा—"तृष्णाएँ ही मनुष्य को खाती हैं। उनसे बचा जा सके तो राजा-रंक सभी समान रूप से सुखी रह सकते हैं।"

आदमी को अधिक से अधिक पाने की चाह रहती तो व्यक्ति को नष्ट करके ही छोड़ती है।

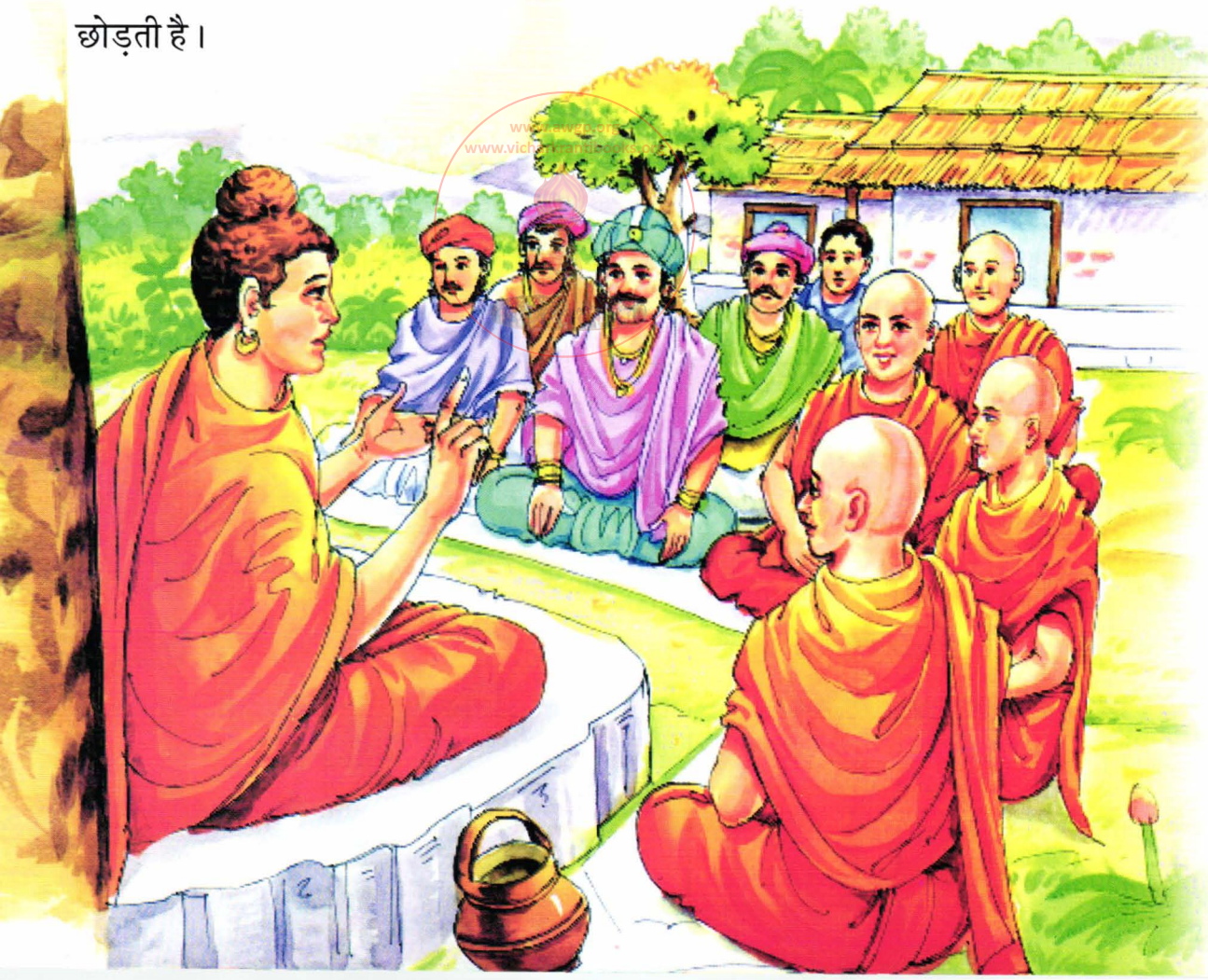

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हृदय परिवर्तन

मगध के एक धनी व्यापारी ने बहुत धन कमाया। उसे अपनी संपन्नता पर इतना गर्व हुआ कि वह अपने घर के लोगों पर ऐंठा करता, सबको डाँटता रहता। पिता के अहंकार को देख-देखकर उसके लड़के भी उद्दंड और अहंकारी हो गए। पिता-पुत्रों में ही लड़ाई होती रहती। घर नरक बन गया।

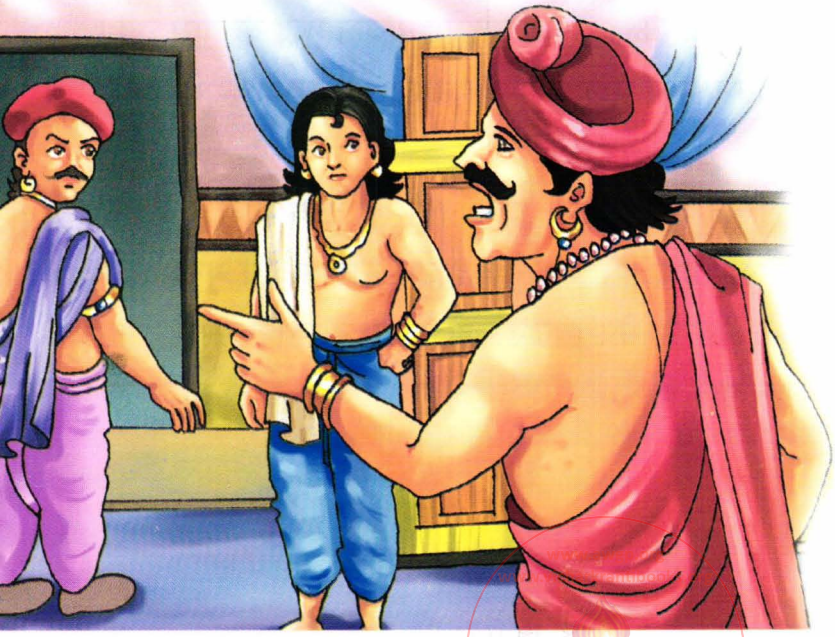

परेशान और दुखी होकर व्यापारी ने महात्मा बुद्ध की शरण ली और कहा—"भगवन्! मुझे इस नरक से मुक्ति दिलाइए, मैं भिक्षु होना चाहता हूँ।"

तथागत ने कुछ सोचकर उत्तर दिया— "भिक्षु बनने का अभी समय नहीं है तात! तुम जैसा चाहते हो वैसा आचरण करके तो घर में ही स्वर्ग के दर्शन कर सकोगे।" तुम सभी के साथ प्रेम और विनम्रता का व्यवहार करो।

व्यापारी घर लौट आया और विनम्रता बरतने लगा। उससे सारे घर का हृदय परिवर्तन हो गया और सुख-शांति के दर्शन होने लगे ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org